आगे गुमटियों चढ़ाय के, नजरों नूर मकान।
कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान।। १८ ।।

आपके बिना रंग महल की चांदनी पर बनी गुमटियों में बिठाकर सामने अक्षरधाम को अपनी अंगुली के इशारे से आपके बिना, हे लाड़ले धनी! कौन बताएगा?

दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन।
सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन।। १९ ।।

दसों भोम के महलों के सुख आपके बिना, हे श्री राजजी महाराज! हमको कौन देगा? आपने ही परमधाम के सुख तारतम वाणी लाकर, हमें इस संसार में दिए।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। १०४९ ।।

अर्स आगूं खुली चांदनी

दोऊ कमाड़ों की क्यों कहूं, नूर रंग दरपन।
ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भरया नूर अंबर धरन।। १ ।।

रंग महल के मुख्य द्वार में दर्पण रंग के नूरी किवाड़ हैं। उसकी रोशनी जमीन पर तथा आसमान पर झलकती है। यहां की जबान से वहां की सिफत कैसे कहें?

दोऊ बाजू बड़े दरवाजे, रूहअल्ला कह्या रंग लाल।
बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूं अर्स दिवाल।। २ ।।

बड़े दरवाजे के दोनों तरफ जो दीवारें हैं उनका श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने रंग लाल बताया है। मिटने वाले तन और जबान से अखण्ड दीवार का वर्णन कैसे करूं?

चबूतरे दीवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब।
जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड़ जाए ख्वाब।। ३ ।।

दोनों चबूतरों पर दीवार में आठ अक्सी मेहराबें हैं। अगर अच्छी तरह से देखें तो इस संसार के स्वप्न का तन तुरन्त छूट जाए।

ए जो कहे आठ मेहेराब, दोऊ चबूतरों पर।
ए बैठक हक हादी रूहें, भरया नूर जिमी अंबर।। ४ ।।

यह जो आठ मेहराबें दोनों चबूतरों पर बताई हैं, इन चबूतरों पर श्री राजश्यामाजी और रूहें बैठती हैं और उनका तेज जमीन से आसमान तक फैलता है।

बीस थंभ रंग पांच के, आगूं अर्स द्वार।
दस बाएं दस दाहिने, करें रोसन नूर झलकार।। ५ ।।

रंग महल के दरवाजे के दोनों चबूतरों पर पांच नगों के (हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी) बीस थंभे दस बाएं तथा दस दाएं झलकते हैं।

हीरा मानिक पोखरे, पाच नीलवी जे।
नूर थंभ तरफ दाहिनी, तरफ बाईं यही नूर के।। ६ ।।

हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी (नीलम) के दस थंभ दाहिनी तरफ तथा इसी तरह के दस थंभ बाईं तरफ हैं।

Nijanand App

ज्यों आगूं त्यों पीछल, याके सनमुख माहें दिवाल।
बीसों दोए चबूतरे, इन दिवाल रंग लाल।।७।।

जैसे आगे वैसे पीछे दीवार में अक्सी थंभ दोनों चबूतरों पर बीस थम्भ शोभा देते हैं और दीवार का रंग लाल है।

अर्स आगूं खुली चांदनी, माहें चबूतरे चार।
दोए तले बीच बन के, दो ऊपर लगते द्वार।।८।।

रंग महल के सामने खुला चांदनी चौक है। इसमें चार चबूतरे दिखाई देते हैं। दो चबूतरे नीचे अमृत वन में हैं जिन पर दो पेड़ लाल और हरा लगे हैं और दो चबूतरे बड़े दरवाजे के दाएं व बाएं हैं।

इन मोहोलों सुख क्यों कहूं, आगूं बड़े दरबार।
हक हादी सुख इन कठेड़े, देत बैठाए बारे हजार।।९।।

रंग महल के बड़े दरबार के सुख कैसे कहूं? यहां श्री राजजी महाराज कठेड़े लगे चबूतरों पर बैठकर बारह हजार रूहों को सुख देते हैं।

आगूं इन मोहोलों खेलौंने, खेल करत कला अपार।
नाम जुदे जुदे तो कहूं, जो कहूं आवे माहें सुमार।।१०।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक में पशु-पक्षी तरह-तरह की कलाएं दिखाकर खेल करते हैं। इनकी अलग-अलग हकीकत तब कहें जब वह सीमा में हो।

ए सुख लें अरवा अर्स की, हक हादी संग निस दिन।
ए जाहेर किया इत हुकमें, वास्ते हम मोमिन।।११।।

श्री राजश्यामाजी के साथ रूहें प्रतिदिन सुख लेती हैं। श्री राजजी महाराज ने हम मोमिनों के वास्ते ही हुकम से यहां पहचान कराई है।

चारों हांसों खुली चांदनी, तीन तरफों बन बराबर।
तरफ चौथी झरोखे अर्सके, सोभे आगूं चबूतर।।१२।।

ऊपर वाले दो चबूतरों की चारों दिशाओं में तीन तरफ वन और चौथी तरफ धाम के झरोखे दिखाई देते हैं और चारों हांसों के सामने खुली चांदनी आई है।

तले जो दोऊ चबूतरे, बिरिख लाल हरा तिन पर।
ए बिरिख द्वार चबूतरे, नूर रोसन करत अंबर।।१३।।

चांदनी चौक के दोनों चबूतरों पर लाल और हरा वृक्ष आसमान तक शोभा करते हैं।

इत जोत जिमी की क्यों कहूं, हुओ आकास जिमी एक।
सोभा क्यों कहूं आगूं अर्सके, जानों सबसे एह विसेक।।१४।।

यहां चांदनी चौक की जमीन का तेज आसमान तक एकाकार हो गया है। रंग महल के सामने की यह शोभा विशेष रूप की है। इसका वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

आगूं अर्स चबूतरे, हम सखियां बैठत मिलकर।
ए सुख हमारे कहां गए, खेलत नाचत बांदर।। १५ ।।

रंग महल के सामने के चबूतरे पर हम सखियां मिलकर बैठती हैं। हमारे सामने बन्दर नाचते हैं। यह सुख हमारे कहां गए?

इत तखत कदेले कुरसियां, बैठें रूहें बारे हजार।
सुख इतके हमारे कहां गए, मोर नचावनहार।। १६ ।।

यहां चबूतरे के ऊपर तख्त हैं। इनके ऊपर दुलीचे बिछे हैं। यहां हम बारह हजार रूहें कुर्सियों पर बैठकर मोरों का नाच देखती हैं। यह सुख हमारे कहां गए?

हक हमारे इत बैठके, कई विध करें मनुहार।
कई पसु पंखी अर्सके, इत सुख देते अपार।। १७ ।।

यहां श्री राजजी महाराज हमारे साथ बैठकर कई प्रकार के मनोरंजन करते हैं। परमधाम के कई पशु पक्षी अपनी कलाओं से सुख देते हैं।

सुख सब पसु पंखियन के, कई खेल बोल दें सुख।
ए आगूं अर्स आराम के, क्यों कर कहूं इन मुख।। १८ ।।

पशु-पक्षी अपनी कलाओं से खेलकर तथा मीठी बोलियां बोलकर रंग महल के सामने तरह-तरह के सुख देते हैं। संसार के मुख से अखण्ड की शोभा कैसे बताएं?

कबूं एक एक पसु खेलत, कबूं एक एक जानवर।
ए सुख अर्स अजीम के, सुपन जुबां कहे क्यों कर।। १९ ।।

कभी एक-एक पशु कभी एक-एक जानवर खेलते हैं। परमधाम के इस अखण्ड सुख का यहां की जबान से कैसे बयान करूं?

कई बांदर बाजे बजावहीं, आगूं अर्स के नाचत।
ए सुख हमारे कहां गए, हम देख देख राचत।। २० ।।

कई बन्दर बाजे बजाकर रंग महल के आगे नाचते हैं। इन्हें देख-देखकर हम बहुत खुश होते हैं। वह सुख हमारे कहां गए?

इत कई विध पसु खेलत, कई खेलत हैं जानवर।
खेल बोल नाच देखावहीं, कई हंसावत लड़कर।। २१ ।।

यहां कई तरह के पशु खेलते हैं तथा कई खेलकर, बोलकर, कई नाचकर तथा कई लड़कर हमको हंसाते हैं।

हक हादी रूहें चांदनी बैठत, ऊपर होत बखत मलार।
मोर बांदर दादुर कोकिला, सुख देत कर टहुंकार।। २२ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें मलार (वर्षा) ऋतु में चांदनी चौक में बैठते हैं। जहां पर मोर, बन्दर, मेंढ़क (दादुर), कोयल अपनी सुन्दर आवाज सुनाते हैं।

Nijanand App

सुख कहां गए इन समें के, कई विध बन करें गुंजार।
सेहेरां गाजत छाया बादली, होत बीजलियां चमकार।। २३ ।।

गहरे बादल आकाश में गरजते हैं। बिजलियां चमकती हैं। कई तरह की वन में आवाज गूंजती है। यह सुख हमारे कहां गए?

बट पीपल की चौकियां, चारों भोम हिंडोले।
ए सुख कब हम लेवेंगे, हक हादी रूहें भेले।। २४ ।।

रंग महल की दक्षिण दिशा में बट-पीपल की चौकी है। जिसकी चारों भोमों में हिंडोले लगे हैं। जहां श्री राजश्यामाजी के साथ हम रूहें इकट्ठी झूलती हैं। वह सुख अब हम कब लेंगे?

चारों भोम चौकी हिंडोले, हक हादी रूहें हींचत।
हम सुख लेती सब मिल के, सो कहां गई निसबत।। २५ ।।

बट-पीपल की चौकी में हिंडोले चारों भोम में हैं। जहां पर हम सब रूहें मिलकर हिंडोलों का श्री राजजी से आनन्द लेती थीं। अब हमारा वह अंगना भाव कहां चला गया?

एक अलंग सारी हिंडोले, सो सिफत न कही जाए।
अधिकारी इन सुख के, सो काहे को रूह बिलखाए।। २६ ।।

इस चौकी में हिंडोले एक सीध में लगे हैं। इनकी शोभा कहने में नहीं आती। जो इस सुख के अधिकारी हैं वही जानते हैं। इसलिए, हे श्री राजजी महाराज! रूहों को क्यों रुलाते हो?

पसु पंखी चारों भोम के, सुख देत दिल चाहे।
सो सुख कब लेसी मोमिन, क्यों इन बिन रह्यो जाए।। २७ ।।

बट-पीपल की चारों भोमों में पशु-पक्षी तरह-तरह के सुख देते हैं। हम मोमिनों को यह सुख फिर कब मिलेंगे? अब हमसे इनके बिना नहीं रहा जाता।

कब सुख लेसी फूल बाग के, बाग ऊपर झरोखे।
कहां जाऊं किन सों कहूं, कब हम सुख लेवें ए।। २८ ।।

रंग महल की पच्छिम दिशा में फूलबाग के सुख हैं जिनकी शोभा रंग महल के झरोखे से देखी जाती है। अब कहां जाऊं? किससे कहूं? यह सुख हमें कब मिलेंगे?

ए जो चेहेबच्चे फूल बाग के, इत कारंजे उछलत।
ए सुख कब हम पावेंगे, कहां जाए पुकारूं कित।। २९ ।।

फूलबाग के चहबच्चों में फुहारे उछलते हैं। इन्हें हम कब पाएंगे? यह पुकार किसके सामने करें?

जो सुख लाल चबूतरे, लेत मोहोला बड़े पसुअन।
ए बैठक सुख क्यों कहूं, ए सुख जानें अर्स के तन।। ३० ।।

रंग महल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरे पर बैठकर बड़े पशु-पक्षियों का मुजरा (दर्शन, अभिवादन) लेते थे। जिस सुख को हमारी परआतम ही जानती है। इस बैठक के सुख का बयान कैसे करूं?

Nijanand App

हांस चालीस चबूतरा, धरत कठेड़ा जोत।
केहे केहे मुख केता कहे, आसमान भर्‌यो उद्दोत।। ३१ ।।

चालीस हांस में लाल चबूतरा है, जिसके किनारे पर कठेड़ा लगा है। उसकी नूरी किरणें आसमान तक उठती हैं। यहां के मुख से वहां का कहां तक बयान करूं?

बाघ चीते गज केसरी, हंस गरुड़ मुरग मोर।
पसु पंखी सुख क्यों कहूं, इन जुबां के जोर।। ३२ ।।

बाघ, चीता, हाथी, बब्बर शेर, हंस, गरुड़, मुर्गा, मोर सभी पशु-पक्षियों के सुख यहां की जबान से कैसे बयान करूं?

इत बिछौने दुलीचे, ऊपर सोभित सिंघासन।
सोभे कई भांतों छत्रियां, कब हक देवें हादी रूहन।। ३३ ।।

यहां सिंहासन के ऊपर बिछौना और दुलीचा बिछा है तथा उनके ऊपर कई तरह की छतरियां शोभा देती हैं। श्री राजजी महाराज श्यामा महारानी और हम रूहों को यह सुख कब देंगे?

कई रंगों बन सोभित, चौक सोभित चबूतर।
ए खूबी आगूं अर्सके, इन जुबां कहूं क्यों कर।। ३४ ।।

चांदनी चौक में वनों में कई रंगों की शोभा दिखाई देती है। रंग महल के सामने के चबूतरे और भी अधिक शोभा देते हैं। यहां की जबान से वहां की हकीकत कैसे बताएं?

कहां बन कहां खेलना, कहां सुख मेले सखियन।
कहां नाचें मोर बांदर, कहां सुख पसु पंखियन।। ३५ ।।

अब उन वनों के खेलने, सखियों के साथ मिलकर बैठने, मोर और बंदरों के नाचने तथा पशु-पक्षियों के सुख का कैसे बयान करूं?

अर्स जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास।
कब देखें सुख इन जिमी, जित बरसत नूर प्रकास।। ३६ ।।

परमधाम के एक कण की भी रोशनी आकाश में नहीं समाती। उस परमधाम की इस जमीन में बैठकर नूर की वर्षा के सुन्दर सुख हमें कब देखने को मिलेंगे?

जोत एक दरखत पात की, हुओ अंबर जिमी रोसन।
धनी ए सुख कब देओगे हमें, अपने इन बागन।। ३७ ।।

वृक्ष के एक पत्ते के तेज की रोशनी जमीन और आसमान में छाई रहती है। हे श्री राजजी महाराज! अपने इन बगीचों के सुख अब हमें कब दोगे?

इत हक कहावें हुकम कहे, वास्ते हादी रूहन।
अर्स में केहेसी सुख खेल के, सिर ले कहे महामत मोमिन।। ३८ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों से कहते हैं कि श्री राजजी महाराज रूहों के वास्ते मेरे तन में बैठकर हुकम से कहलवा रहे हैं इसलिए मैं कहती हूं कि परमधाम में जागने के बाद खेल के सुखों को याद करेंगे।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ १०८७ ॥

Nijanand App